LEAGUE OF NATIONS-3

FOR P.G. SEM-2,CC-6,UNIT-1

BY:ARUN KUMAR RAI
ASST.PROFESSOR
P.G.DEPT.OF HISTORY
MAHARAJA COLLEGE
ARA.

राष्ट्र संघ की असफलता के कारण

प्रथम विश्व युद्ध के बाद राष्ट्र संघ की स्थापना इसी उद्देश्य की गई थी कि वह संसार में शांति रखेगा लेकिन जब समय आया तो राष्ट्र संघ एक शक्तिहीन संस्था साबित हुआ ।छोटे-छोटे राष्ट्रों के पारस्परिक झगड़ों का प्रश्न था उसमें राष्ट्र संघ को सफलता मिली लेकिन जब बड़े राष्ट्रों का मामला आया तो यह कुछ भी ना कर सका। अधिनायकों को जब पता चल गया कि राष्ट्र संघ बिल्कुल शक्तिहीन संस्था है और वे कुछ भी मनमानी कर सकते हैं इस हालत में उसकी असफलता निश्चित हो गई।

वार्साय संधि से संबंध

राष्ट्र संघ का दुर्भाग्य था कि उसका जन्म वर्साय संधि के द्वारा हुआ ।वर्साय की संधि बहुत कठोर थी तथा प्रारंभ में पराजित राष्ट्र को राष्ट्र संघ का सदस्य भी नहीं बनाया गया था अतः पराजित इससे असंतुष्ट थे।वे राष्ट्र संघ को विजेता राष्ट्र द्वारा अपनी स्वार्थ सिद्धि का यंत्र मानते थे। उसे यथास्थिति बनाए रखने वाले पश्चिमी राष्ट्रों का गुट समझा जाता कठोर संधियों से संबंधित होने के कारण ***नॉर्मन वेंटविच*** ने लिखा है कि- **राष्ट्र संघ कुख्यात माता की सम्मानित बेटी थी।** राष्ट्र संघ का जन्म अच्छे वातावरण हुआ होता तो समस्त राष्ट्र की सहानुभूति उसके साथ होती।

अमेरिका का राष्ट्र संघ से बाहर रहना

- राष्ट्र संघ की स्थापना विल्सन के प्रयासों से हुई थी लेकिन अमेरिकी सीनेट ने इसकी सदस्यता को इनकार कर दिया इस कारण राष्ट्र संघ अपने प्रबल समर्थक के सहयोग से वंचित हो गया ।
- अमेरिका की अनुपस्थिति में राष्ट्र संघ यूरोपीय राष्ट्रों की संकुचित विचारधारा का केंद्र हो गया। इसके कारण राष्ट्र संघ की शक्ति बहुत कम हो गई ।
- नई दुनिया के विशाल क्षेत्र अंतरराष्ट्रीय संगठन से बाहर हो गया जिसके कारण राष्ट्र संघ एक विश्वव्यापी संगठन नहीं बन पाया।

अमेरिका का राष्ट्र संघ से बाहर रहना

- इस घटना ने आक्रमक राष्ट्र को बहुत प्रोत्साहित किया क्योंकि अमेरिका के नहीं शामिल होने से राष्ट्र संघ को अपने सदस्यों को आक्रमण से सुरक्षित करने की क्षमता भी कम हो गई। यदि अमेरिका राष्ट्र संघ का सदस्य होता तो जापान और इटली की कार्रवाइयों को अधिक प्रभावकारी ढंग से रोका जा सकता था।
- फ्रांस अपनी सुरक्षा को लेकर चिंतित रहता था।अमेरिका तथा ब्रिटेन ने मिलकर फ्रांस को सुरक्षा की गारंटी दी थी किंतु अमेरिका

अमेरिका का राष्ट्र संघ से बाहर रहना

के राष्ट्र संघ के सदस्य न होने पर यह गारंटी समाप्त हो गई जिसके फलस्वरूप फ्रांस अपनी सुरक्षा के लिए खुद प्रबंध करने लगा। इसका परिणाम विश्व शांति के लिए विनाशकारी सिद्ध हुआ। यदि अमेरिका राष्ट्र संघ का सदस्य होता तो इटली ,जर्मनी ,रूस तथा जापान की आक्रमणकारी नीति को रोका जा सकता था।

सार्वभौमिकता का अभाव

राष्ट्र संघ को कभी भी विश्व की महा शक्तियों का सहयोग प्राप्त नहीं हुआ। उस का जन्मदाता अमेरिका कभी उस का सदस्य नहीं बना । रूस साम्यवादी क्रांति के कारण आरंभ में तटस्थ रहा। मित्र राष्ट्र उसको घृणा की दृष्टि से देखते थे। वह राष्ट्र संघ को पूंजीवाद का संरक्षक समझता था ।1934 में रूस को इसका सदस्य बनाया गया परंतु 1939 में फिनलैंड पर आक्रमण करने के कारण अलग कर दिया। जर्मनी को 1926 में इसका सदस्य बनाया गया परन्तु 1933 में इसने इसकी सदस्यता छोड़ दी। इसी वर्ष जापान ने भी राष्ट्र संघको छोड़ दिया।

सार्वभौमिकता का अभाव

1936 में इटली ने भी इसको छोड़ दिया इस प्रकार कभी भी राष्ट्र संघ को सभी महा शक्तियों का सहयोग प्राप्त नहीं हुआ। कुछ विद्वानों ने इसको इंग्लैंड तथा फ्रांस के हितों की रक्षा करने वाला संगठन कहा है तो कुछ ने इसको विजेताओं का संघ तथा कुछ ने सन्तुष्ट राष्ट्रों का संगठन कहा है।

सदस्य राज्यों का असहयोग

विश्व की सभी महा शक्तियों का सहयोग राष्ट्र संघ को नहीं मिल पाया। जो राष्ट्र इसके सदस्यों में भी थे वे सच्चे हृदय से इसके सहयोगी नहीं थे ।राष्ट्र संघ के संविधान में आक्रमणकारी देश के विरुद्ध आर्थिक प्रतिबंध लगाने की बात थी और सदस्य राज्यों के सहयोग के आधार पर सैन्य कार्रवाई भी की जा सकती थी परंतु अवसर आने पर सदस्य राज्यों में इन कार्यों को कराने के लिए सहयोग की भावना का अभाव पाया गया ।इटली के अबीसीनिया पर आक्रमण के विरुद्ध उस पर आर्थिक प्रतिबंध लगाए गए थे किन्तु यह प्रतिबंध अधूरे थे। इटली में तेल का आयात नहीं रोका गया था तथा उसको उसके लिए स्वेज नहर भी बंद नही किया गया था।

सदस्य राज्यों का असहयोग

- इंग्लैंड तथा फ्रांस इटली को जर्मनी के साथ मिलने से रोकने के लिए वह उसे अफ्रीका में अबाध गति से बढ़ने देना चाहते थे। इन महा शक्तियों में कोई भी एकमात्र सिद्धांत की रक्षा के लिए इटली से युद्ध करने के लिए तैयार नहीं था। इसी कारण से **शूमाँ** ने इटली के विरुद्ध लगाए गए इन प्रतिबंध को **कोरा ढोंग** कहा है इस तरह से सदस्य राज्यों का असहयोग राष्ट्र संघ के लिए विनाशकारी सिद्ध हुआ।

राष्ट्र संघ के पास अंतरराष्ट्रीय सेना का अभाव

- आक्रमणकारी देशों के विरुद्ध कार्यवाही करने के लिए राष्ट्र संघ के पास कोई अंतरराष्ट्रीय सेना नहीं थी। उसे अपने सदस्य राज्यों पर इसके लिए निर्भर रहना पड़ता था ।वह अपने सदस्य राज्यों से सेना भेजने के लिए प्रार्थना ही कर सकता था। उनको बाध्य नहीं कर सकता था। ऐसे में अंतरराष्ट्रीय कानूनों को भंग करने वालों के खिलाफ राष्ट्र संघ कोई भी कार्रवाई अपने बलबूते नहीं कर सकता था।

राष्ट्र संघ का दोषपूर्ण संविधान

- राष्ट्र संघ की कार्यपद्धती बहुत जटिल थी ।छोटी-छोटी बातों के लिए लंबे लंबे विवाद हुआ करते थे ।प्रत्येक निर्णय के लिए राष्ट्र संघ के बड़े सदस्यों का सर्व सम्मत होना आवश्यक था परंतु सदस्यों का सर्व सम्मत होना बहुत कठिन था।
- यह विश्व संघ नहीं था ।आरम्भ से ही संयुक्त राज्य अमेरिका इससे अलग हो गया ।असेंबली के प्रथम अधिवेशन में अर्जेंटीना के प्रतिनिधि ने यह सुझाव रखा की विश्व के सभी राज्यों को इसका सदस्य बना दिया। यह सुझाव नहीं माना गया।

राष्ट्र संघ का दोषपूर्ण संविधान

- राष्ट्र संघ के संविधान में सदस्यता समाप्त करने की व्यवस्था कर दी गई थी।कोई भी सदस्य 2 वर्ष पूर्व सूचना देकर राष्ट्र संघ से प्रथक हो सकता था ।यह एक बहुत बड़ा दोष था। ब्राज़ील ,कोस्टा रिका ,जापान ,जर्मनी और इटली राष्ट्र संघ से पृथक हो गए।
- आर्थिक दृष्टिकोण से भी राष्ट्र संघ की स्थिति अच्छी नहीं थी। उसको सदस्य राज्यों से चंदा पर निर्भर करना पड़ता था । कर लगाने का कोई अधिकार नहीं था।

राष्ट्र संघ का दोषपूर्ण संविधान

- राष्ट्रसंघ सदस्य राज्यों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं कर सकता था। नतीजा यह होता था कि सदस्य राज्य राष्ट्र संघ की उपेक्षा करने के लिए वैसी बातों को भी आंतरिक मामलों के अंतर्गत रख लेते थे जिनका संबंध अंतरराष्ट्रीय राजनीति से रहता था। यह शर्त कोई बुरी नहीं थी लेकिन विधान के द्वारा इसकी सीमा निर्धारित होनी चाहिए थी।

विश्वव्यापी आर्थिक मंदी

- विश्वव्यापी आर्थिक मंदी (1930) के कारण प्राय प्रत्येक देश की अवस्था बहुत खराब हो गई ।इससे प्रत्येक देश को अपने देश के हितों की चिंता सबसे अधिक हो गयी। इससे अंतरराष्ट्रीयता के सिद्धांत को बहुत गहरा धक्का। आर्थिक मंदी के कारण रूस पूंजीवाद का विरोधी हो गया। पूंजीवादी देश रूस के विरोधी हो गए ।उन राष्ट्रों ने रूस विरोधी जर्मनी इटली तथा जापान के प्रति तुष्टिकरण के सिद्धांत का पालन किया। यह सिद्धांत अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा के लिए विनाशकारी सिद्ध हुआ।

उग्र राष्ट्रीय भावना की प्रधानता

महायुद्ध का प्रधान कारण उग्र राष्ट्रीयता की भावना थी परंतु इसके बाद भी राजनीतिज्ञों ने इस भावना का पूर्ण परित्याग नहीं किया। अवसर पड़ने पर उन्होंने अंतरराष्ट्रीयता का परित्याग कर राष्ट्रीयता के सिद्धांत को ही महत्व दिया।ऐसे में अंतर राष्ट्रवाद एवं सामूहिक सुरक्षा के सिद्धांत को गहरा धक्का लगा। इस प्रकार राष्ट्र संघ की असफलता का बहुत कुछ उत्तरदायित्व राष्ट्रीयता की उग्र भावना पर है।

महा शक्तियों के विभिन्न विरोधी दृष्टिकोण

- राष्ट्र संघ के प्रति महा शक्तियों के दृष्टिकोण परस्पर विरोधी थे। फ्रांस इसको वर्साय संधि का संरक्षक तथा जर्मनी से सुरक्षा पाने का साधन समझता था। जर्मनी से अपनी सुरक्षा के लिए ही फ्रांस ने अबीसीनिया की रक्षा की उपेक्षा की ।इंग्लैंड को सबसे अधिक चिंता अपने व्यापारिक हितों की थी ।इसी से वह जर्मनी के प्रति उदार नीति का समर्थक था । पश्चिम के राष्ट्र रूस की साम्यवादी सरकार को घृणा की दृष्टि से देखते थे। अतः रूस भी राष्ट्र संघ का विरोधी था। इस प्रकार कोई भी राष्ट्र सच्चे अर्थों में राष्ट्र संघ के सिद्धांतों में विश्वास नहीं रखता था।

राष्ट्र संघ के सदस्यों का जनता के प्रतिनिधि न होना

राष्ट्र संघके सदस्य जनता के प्रतिनिधि नहीं थे। उनका चुनाव विभिन्न देशों में जनता द्वारा नहीं होता था ।वह अपनी सरकारों द्वारा मनोनीत होते थे इसलिए वे जनता के प्रतिनिधि ना होकर अपने सरकारों के प्रतिनिधि थे।

अधिनायकवाद का उदय

1930 के पश्चात यूरोप के कई देशों में अधिनायको का उदय हुआ जो वार्ता के स्थान पर सेना को महत्व देते थे ।इटली में मुसोलिनी, जर्मनी में हिटलर, स्पेन में जनरल फ्रैंको इसी प्रकार के अधिनायक थे। जापान में भी सैन्यवाद तथा अधिनायकवाद की भावनाएं कार्य कर रही थी । इससे लोकतंत्र का भविष्य खतरे में पड़ गया। ये हमेशा अपने उद्देश्यों की प्राप्ति पर फोकस करते रहे भले ही यह कार्य जनेवा की सहायता से हो ,उसकी सहायता के बिना हो या उसके विरोध करके हो।

अधिनायकवाद का उदय

(With Geneva, without Geneva or against Geneva) 1936-37 मैं इन सभी अधिनायकों ने रोम ***बर्लिन- टोक्यो धुरी*** की स्थापना की। प्रारंभ इसमें इटली जर्मनी तथा जापान सम्मिलित था ।आगे चलकर स्पेन तथा मंचूकाओ भी इसमें सम्मिलित हो गया। इस प्रकार अधिनायकवाद का उदय राष्ट्र संघ के लिए विनाशकारी सिद्ध हुआ ।

निष्कर्ष

- इस प्रकार अनेक त्रुटियों के कारण राष्ट्र संघ विफल हो गया। यह त्रुटियां मौलिक नहीं थी। इसके बावजूद राष्ट्र संघ को सफल बनाया जा सकता था। सत्य तो यह है कि यदि राष्ट्र संघ के सदस्य चाहते तो अवश्य अपने उद्देश्यों की पूर्ति कर लेते लेकिन सदस्यों में नेक नियति का अभाव था। ***विंस्टन चर्चिल*** ने ठीक ही कहा है कि- ***राष्ट्र संघ की असफलता के लिए राष्ट्र संघ नहीं वरन सदस्य राज्य -दोषी थे।***